इतिहास/विरासत खंड

हज़रत अमीर ख़ुसरो के दोसुख़ने और हरियाणवी लोक संस्कृति

-सीताराम गुप्ता

हज़रत अमीर ख़ुसरो देहलवी खड़ी बोली, हिंदवी अथवा हिंदी भाषा के पहले कवि माने जाते हैं। हिंदीवाले उन्हें हिंदी का कवि मानते हैं तो उर्दूवाले उर्दू का। बहरहाल वे एक अत्यंत लोकप्रिय कवि हैं। उनकी दोसुख़ना नामक काव्य शैली अथवा विधा में कुछ रचनाएँ मिलती हैं, जो न केवल रोचक हैं अपितु, अद्वितीय भी हैं। इनसे पता चलता है कि अमीर ख़ुसरो न केवल हिंदी के कवि हैं, अपितु हिंदी की अनेक बोलियों, जिनमें हरियाणवी भी है, के अच्छे जानकार हैं। इसके लिए पहले उनके कुछ दोसुख़ने देखने और समझने का प्रयास करते हैं:

राजा प्यासा क्यों? गधा उदासा क्यों?

'लोटा' न था।

यहाँ दोनों समस्याओं अथवा पहेलियों का उत्तर है 'लोटा' न था। 'लोटा' नामक बर्तन न होने की वजह से राजा पानी न पी सका और प्यासा ही रह गया। गधे की उदासी का कारण भी था, उसका रेत में लोट न मार सकना। गधा जब तक रेत में लोट न लगा ले उसे मज़ा नहीं आता। क्योंकि गधा रेत में नहीं लोटा था इसलिए उदास था।

समोसा क्यों न खाया? जूता क्यों न पहना?

'तला' न था।

यहाँ पर भी दोनों समस्याओं अथवा पहेलियों का उत्तर है 'तला' न था। 'तला' न जाने की वजह से समोसा कच्चा था, अतः खाया नहीं जा सकता था और जूते में 'तला' अर्थात् सोल टूट जाने अथवा न होने की वजह से पहना नहीं जा सकता था।

अमीर ख़ुसरो की पहेलियाँ हों, मुकरियाँ हों अथवा दोसुख़ने हों सभी अत्यंत लोकप्रिय हैं और इसका कारण है इनमें लोक तत्त्व और लोक संस्कृति का विद्यमान

होना। अब हम उस दोसुखने की बात करते हैं, जिससे अमीर ख़ुसरो के हरियाणवी लोक संस्कृति के ज्ञान का पता चलता है। दोसुख़ना देखिए:

खिचड़ी क्यों न पकाई? कबूतरी क्यों न उड़ाई?

'छड़ी' न थी।

एक जगह इस दोसुखने के उत्तर का स्पष्टीकरण कुछ इस तरह से दिया गया था। खिचड़ी इसलिए नहीं पकाई कि 'छड़ी' अर्थात् खिचड़ी चलाने के लिए कोई डंडी जैसी चीज़ नहीं थी और कबूतरी इसलिए नहीं उड़ाई कि 'छड़ी' अर्थात् डंडी नहीं थी। यदि यहाँ खिचड़ी के संदर्भ में 'छड़ी' का अर्थ डंडी लगाया जाता है, तो इस दोसुख़ने का सारा सौंदर्य नष्ट हो जाता है। यहाँ इस दोसुख़ने का अर्थ समझने के लिए हरियाणा व आसपास के क्षेत्रों की लोक संस्कृति का ज्ञान होना अनिवार्य है। खिचड़ी के संदर्भ में 'छड़ना' एक विशेष एवं महत्त्वपूर्ण क्रिया है। यहाँ दाल-चावल नहीं बाजरे की खिचड़ी की बात हो रही है। वैसे भी खिचड़ी या अन्य किसी चीज़ को पकाते समय चलाने के लिए किसी 'छड़ी' अर्थात् डंडी जैसी चीज़ की नहीं अपितु डोई अथवा कड़छी जैसी चीज़ अथवा साधन की आवश्यकता होती है।

बाजरे की खिचड़ी बनाने के लिए पहले बाजरे की राळी अथवा छिलका उतारकर उसे कूटा जाता है। इसके लिए पहले बाजरे को हलका-सा भिगोकर कुछ देर के लिए रख दिया जाता है और फिर ओखली में डालकर मूसल से हलकी-हलकी चोटें मारकर निकाल लिया जाता है और उसे पिछोड़कर साफ कर लिया जाता है। इसी क्रिया को छड़ना कहा जाता है। छड़ने से बाजरे की राळी अथवा छिलका उतर जाता है। पिछोड़कर साफ करने के बाद बाजरे को एक बार फिर कूटा जाता है और फिर खिचड़ी पकने के लिए रख दी जाती है। यदि खिचड़ी बनाने से पहले बाजरे को छड़ने की क्रिया नहीं की जाती, तो वह खिचड़ी गले में लगती है और उसे हलक़ से नीचे

उतारने में परेशानी होती है। इस अनुभव के अभाव में इस रचना को समझना असंभव है।

यहाँ वास्तव में खिचड़ी इसलिए नहीं पकाई गई, क्योंकि उसे छड़ा नहीं गया था और छड़ने में काफी समय लगता है। बाजरे की खिचड़ी प्रायः शाम को बनाई जाती है, जिसकी तैयारी दोपहर बाद से ही शुरू हो जाती है। बाजरे की खिचड़ी जल्दबाज़ी में बनाने पर ठीक से उसकी राळी नहीं उतर पाती है, जिससे वो स्वादिष्ट नहीं बन पाती। प्रश्न उठता है कि ये दोसुख़ना है क्या? यह पहेली से मिलती-जुलती एक रचना है, जिसमें दो अलग-अलग पहेलियाँ दी होती हैं लेकिन दोनों पहेलियों का उत्तर एक ही होता है। इसका सीधा सा अर्थ है कि उत्तर में जो शब्द आएगा वह द्विअर्थी या अनेकार्थी ही होगा। इसमें एक चीज़ और है और वो ये कि लेखन के स्तर पर भी वह शब्द एक ही होगा अर्थात् उसकी दो वर्तनियाँ नहीं हो सकतीं। वह श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द नहीं हो सकता। अमीर ख़ुसरो का एक और दोसुख़ना देखिए जिससे पता चलता है कि वे उर्दू के नहीं हिंदी के रचनाकार हैं। दोसुखना इस प्रकार से है:

अनार क्यों न चखा? वज़ीर क्यों न रखा?

'दाना' न था।

'दाना' शब्द के दो अर्थ हैं एक है बीज और दूसरा है बुद्धिमान, जिसका विपरीतार्थक नादान होता है। अनार में दाना अर्थात् बीज नहीं था इसलिए नहीं चखा या खाया और व्यक्ति बुद्धिमान नहीं था, इसलिए उसे वज़ीर अथवा मंत्री के तौर पर नहीं रखा।

यदि हम इस दोसुख़ने को हिंदी अर्थात् देवनागरी लिपि में लिखते हैं तो ठीक है, लेकिन यदि हम इसे अरबी-फ़ारसी रस्मुलख़त अर्थात् उर्दू लिपि में लिखते हैं तो ग़लत हो जाता है। कारण उर्दू में दोनों 'दाना' शब्दों की वर्तनियाँ अलग-अलग हैं। पहले 'दाना' **(دانہ)** में 'ना' नून और हे के संयोग से बनता है, जबकि दूसरे 'दाना' **(دانا)** में 'ना' नून और अलिफ के मेल से बनता है। उर्दू में दोनों की वर्तनी और एक हद तक

उच्चारण में भी अंतर है। यहाँ अरबी-फ़ारसी रस्मुलख़त अर्थात् उर्दू लिपि में किसी एक वर्तनी के लिख देने से यह दोसुख़ना रह ही नहीं जाता।

इससे यही स्पष्ट होता है कि इसे हिंदी भाषा के लिए प्रयुक्त देवनागरी लिपि में ही सही-सही लिखा जा सकता है, क्योंकि हिंदी में दोनों की वर्तनी और उच्चारण में अंतर दृष्टिगोचर व कर्णगोचर नहीं होता। अहले-उर्दू वर्तनी और उच्चारण के मामले में हिंदी वालों से कहीं अधिक संवेदनशील होते हैं, इसमें संदेह नहीं। इससे पता लगता है कि अमीर ख़ुसरों ने अपने साहित्य को, विशेष रूप से इस रचना को देवनागरी लिपि में ही लिपिबद्ध किया होगा। यद्यपि उर्दूवाले उन्हें उर्दू का रचनाकार मानते हैं और हिन्दीवाले हिंदी का, लेकिन यहाँ अमीर ख़ुसरो न केवल हिंदी के ज़्यादा क़रीब ठहरते हैं, अपितु हरियाणा के लोक जीवन की भी पूरी समझ रखने वाले दिखते हैं।

सीताराम गुप्ता,
ए.डी. 106 सी., पीतमपुरा,
दिल्ली - 110034
मोबा0 नं0 9555622323
email : srgupta54@yahoo.co.in